REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

बदलते पारिवारिक संदर्भो में वृद्ध और समकालिन हिन्दी उपन्यास (2000 ई0 से अब तक)

कुमारी डॉली जायसवाल
सहायक शिक्षिका
बी एस पी उच्च विद्यालय सेक्टर 2 धुर्वारांची झारखंड

प्रास्तावना :-

"बुढ़ो के साथ लोग कहाँ तक क्या करे,
बुढ़ों को भी जो मौत न आए तो क्या करे।

" अकबर इलाहाबादी

समय परिवर्तनशील है। व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज का निर्माण होता है और इस परिवार को सही ढाँचा प्रदान करने वाला व्यक्ति घर के बड़े वृद्ध ही हुआ करते है जिससे परिवार की उत्पति हुई है। वक्त तेजी से बदलता है पर उसी तरह समाज नहीं बदला करता है वह बदलता परन्तु उसकी गति बहुत धीमी होती है समाज भी सदियों में अपना खेमा बदल ही लेता है। आज के आधुनिक समय में समाज में बहुत बदलाव तेजी से हुए हैं। इंसान जब से तकनीकी तथा पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ा है तब हमारे समाज की सबसे प्रमुख कड़ी परिवार और परिवार का प्रमुख सदस्य मुखिया (वृद्ध) भी बदलाव की मार बहुत ही भारी पड़ा है। आज की वर्तमान (21वी) सदी में मुखिया का कद घटकर छोटा ही नही बल्कि पूरी तरह से बदल गया है। परिवार का मुखिया सदियों से दादा या पर दादा हुआ करते थे जो अब पिता पर आकर रूक गया है। पिता भी पिता जैसा नही, बड़े भाई के जैसा नहीं, बल्कि वह मित्र के जैसा लगता है बल्कि एक दिन वह भी नही रह पाता, दुर्भाग्यवश वह दुश्मन सा लगने लगता है। और एक दिन घर से बाहर का रास्ता दिखाने में तनिक सा भी देर नहीं लगता है और वह घर से वहिष्कृत अपने को वृद्धाश्रम में शरण लेता है। घर से बेदखल पिता का वृद्धाश्रम का यह आसरा पिता का यह कैसा रूप है? घर के मुखिया (वृद्ध पिता/दादा) को जब सुध के समय काटने को आते है तो उसे को मुखियापन से मुक्त कर दिया जाता है। जीवन, पारिवारिक संबंधों और उनके रिश्तों में आ रही गिरावट को हम साहित्यक उपन्यास के माध्यम से देख सकते है। आज के बदलते पारिवारीक संदर्भ में बुजर्ग पीढ़ी पर बहुत सारी साहित्यक उपन्यास सामने आया है। भारतीय समाज और परिवार में पूरी

तरह से परिवर्तन आ चुका है। आज की आधुनिकीकरण और व्यक्तिवार ने समाज को. रिश्ते नाते और संस्कारों को पूरी तरह से बदल डाला है। आज के इस तकनीकी युग में बुजुर्गो का कोई मान-सम्मान नहीं रह गया है। नयी पीढ़ी के पास बुजुर्गो के लिए कोई समय नही है। आज वह घर में अकेला रह गया है। एकल परिवार में वृद्धों की स्थिति एक घर के कोने मात्र ही रह गया है।

आज भारतीय परिवार व रिश्तों ढाँचा में तेजी से परिवर्ततन हुआ है। न केवल परिवार का मुखिया (वृद्ध) बल्कि पिता-पुत्र संबंध में जमीन आसमान का अंतर का चुका है। आज के मूल तकनीक युग में पुत्र से मिले दुख दर्द को आने वाले पिताओं को सदियों सहना हो होगा। और वर्तमान समय मे पिता-पुत्र का संबंध बड़े ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं।

आज के इस युग एक तरफ वृद्ध समय से आशीर्वाद की तरह गुजार रहे है वहीं दूसरी ओर वृद्ध घर से बेदख हो रहे है, मारे-पीटे जा रहे है। (गिलिगडू-2010) या घर से दूर कही चौक चौराहों पर बैठकर समय गिन रहे है। (चार दरवेश-2011) और कुछ नहीं तो भारतीय आश्रम से मठो में (विषय- पुरुष-1997) या पाँचवा आश्रम की शरण में है। आज के समय में ऐस क्रम ही वृद्ध है जिन्हे रिश्तों की आँच (2016) प्राप्त हो रही है। नियतीचक्र (2019) में पिसपर भी सुबहँ का भूला शाम का लौट आते है जिन्हे बुजुर्गों की हाथों से वसीयत (2018) मिलती है। उपन्यास साहित्य समाज व परिवार में कुछ सदस्यों की स्थिति बदलते रूप से दो-चार हुआ जा सकता है।

मस्तराम कपूर द्वारा रचित उपन्यास विषय प्रमुख का नायक धीरे-धीरे घर से बेगाना होकर एक मठ में पहुँच जाता है। अक्सर बुजर्ग मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारों की शरण में चले जाते है और अधिक संत के कथा पंडलों में प्रवचन सुनकर तालिम बजाकर अपने जीवन भर के लिए पापों के मुक्ति के उपाय खोजते हैं जबकि यहाँ भी दिखावे और भ्रमों के सिवा उन्हे कुछ नहीं प्राप्त होता है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में कृष्ण सोबती का समय सरगम में ऐसे सौभाग्यशाली कहाँ है जो एक के बिछुड़ जाने पर अकेले होकर घुटघुट कर न जीते कृष्णा सोबती की रचना में आरण्या और ईशान दोनों मिलकर जैसा जीवन जीते है वह रचनाकार की कल्पना की दुनिया भले हो प्ररन्तु उसमें आदर्श वृद्ध जीवन की झलक/कांची दिखाई पड़ती है और भारतीय परंपरा को नई दिशा मिलती है। अन्यथा वृद्ध मौत का इंतजार करने का दूसरा नाम है।

आज की इस तकनीक युग में व्यक्ति द्वारा कुते भी पसंद हो सकती है। परन्तु घर की प्रमुख वृद्ध नहीं। चित्रा मुद्रण के उपन्यास गिलिगडू में एक कोना में किसी तरह सांस ले रहा वृद्ध है तो उसका मिन्त्र पूर्व सैनिक अपने और वैध पुत्र द्वारा मारकार छोड़ दिया जाता है। दोनों एक-दूसरे के चाहते हुए भी एक-दूसरे के घर नहीं जा पाते है। जब एक जाता है तो जब तक वह कई दिनों पूर्व वह दुनिया से जा चुका होता है। हर वृद्ध की नियति है मौत। चार वृद्ध कहने को तो अपने-अपने पुत्रों के साथ घर में रहते है परन्तु उन चारों मिलन स्थान होता है शहर के बाहर पुलिया या बाग-बगिचे। यही पर वे दुनिय जहान की बाते खुलकर करते है। ये वृद्ध लोग अपेन लिए उपयुक्त घर मुहल्ले और शहर से दूर दिन बिताते हुए नजर आते है।
जसवन्त सिंह और कर्नल स्वामी की पंक्तियां :-

'बच्चे बड़े हो गए
और बौना हो गया पिता।
घर का एक बेकाना कोना
बिछौना हो गया पिता।
अपने पांव पर खड़े हो गए
खेलते बच्चे और खिलौना हो गया पिता।

भारतीय समाज में परिवार निर्माण का मुख्य भूमिका निभाने वाला पिता (वृद्ध) भी तीन विशेषताएँ दिखाई पड़ती है वह अनुभव, धर्य और प्रदाय। इन तीनों विशेषताओं में महत्वपूर्ण विशेषता है प्रदाय। बुजुर्ग अपनी संतान को वो अपना सब कुछ देना चाहते है परन्तु वह भूखा पीढ़ी पर निर्भर करता है कि वह संतान के रूप में कितना ग्रहण करता है। इसके बीच ढलती उम्र चाहे आम मनुष्य हो या लेखक सभी के लिए चिंता का विषय बन जाता है। इस संदर्भ में मिथिलिशरण गुप्त ने एक ही दुःख के साथ लिखा

"अब वे वासर बित गए,
मन तो भरा-भरा है लेकिन,
तन के सब रस रीत बीत.
चमक छोड़ चौमासे बीत
केवल छोड़कर शीत गए.

लेकर मधु की उष्मा सारी
मेरे मन में पीट गए।
अब तो बादल गुंजी बची है.
जीवन के सब गीत गए,
इस राम जाने जीवन में,
हम सारे या जीत गए।

समाज में वृद्धों के समक्ष जो समस्याएँ उभर कर आ रही है, वह है शारीरिक, मानसिक तनाव, पारिवारिक अलगाव, बेगानापन का भाव, आर्थिक असमर्थता, दो पीढ़ियों के बीच मानसिक टकराहट इत्यादि। भारतीय कहावते है पुत कपूत हो सकता है पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। अर्थात् पुत्र भले ही कुपात्र हो जाए पर माँ-बाप कभी कुपात्र नहीं होते। मुख्य रूप से यह देखा गया है आज के समय में वृद्ध भी समस्या एक सामाजिक समस्या बन गई है। इनके सामाधान के लिए परिवार, समाज और सरकार को साझेदारी से काम करने की आवश्यकता है। अतः वृद्धों का वृद्धाश्रम में रख देने मात्र इनका निपटारा नहीं हो सकता।

शोध की आवश्यकता

आज के बदलते सांसारिक अनुभव के बीच तकनीकी युग में वृद्ध के खोखला हो चुका है। समाज नई पीढ़ी को सही दिशा दिखाने और मार्गदर्शन के लिए वशिष्ठ नागरिकों के योगदान को सम्मान देने के लिए संयुक्त दिवस मनाने राष्ट्र ने 1990 AD. में अंतराष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाने का फैसला लिया था। और बहुत सारे उपन्यासकारों ने अपने लेखन कला के माध्यम से उनकी समस्याओं को समाज के समक्ष रखने का अथक प्रयास किए है परन्तु 21वीं सदी के हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों ने बदलते पारिवारीक संदों में वृद्ध विषय पर अध्यापन करते हुए अनेक अलक्षित विन्दुओं को प्रस्तुत करना हमारे शोध कार्य का अभिष्ट है

दुनिया में वृद्ध दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई यह एक सापेक्ष विषय है। क्यों वृद्धों की उपेक्षा प्रतडताना की स्थितियों हुई है। आज बदलते परिवारीक संदर्भ में बुजुर्गों जैसे विषय पर सम्पूर्ण शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए इस पर शोध की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं किया जा सक

शोध की समस्या

आज के वर्तमान समय 'बदलते पारिवारीक संदर्भों में वृद्ध तथा समकालिन हिन्दी उपन्यास (2000 A.D. से अब तक)" जैसा विषय बड़ा ही चर्चित और बहस के मुद्दे के रूप में उभर कर आया है।

परिवार का अर्थ

परिवार शब्द अंग्रेजी भाषा के Family शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। अंग्रेजी शब्द विषय लैटिन भाषा के शब्द Famulusसे निकला है। Familusशब्द का अर्थ एक ऐसे शब्द से लगाया जाता है जिसमें माता-पिता, बच्चे, नौकर तथा यहाँ तक कि दास भी शामिल किए जाते है। परिवार कमोवेश एक सार्वभौमिक, स्थायी व सर्वकालिक संस्था है। यह स्त्री पुरूष के यौन संबंधों को सामाजिक स्वीकृति प्रदान करती तथा संतोनोत्पति एवं उत्पन्न संतान के पालन पोषण की व्यवस्था करती है।

परिवार की परिभाषा:-

एक अर्थ में हम परिवार की परिभाषा में एक बच्चे सहित स्त्री और उनकी देखभाल के लिए पुरूष को ले सकते है

वीसेंज तथा बीजेंस

परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते है. रक्त से संबंधित होते है स्थान, स्वार्थ और पारस्परिक आदान-प्रदान के आधार पर एक किस्म की चेतनता अनुभव करते है। D.N. Majumdar

वृद्ध का अर्थ :-

वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है बढ़ा हुआ, पका हुआ परिपक्व। "वृद्धाश्रम या बुढ़ापा जीवन की उस अवस्था को कहते है जिसमें उम्र मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है।

"वृद्धावस्था एक धीरे 2 आने वाल अवस्था है जो एक स्वभाविक व प्राकृतिक घटना है।

वृद्धावस्था जीवन प्रक्रिया का अंतिम चरण है। यह शारीरिक एवं सामाजिक दृष्टि से हास का दौर के जिसमें व्यक्ति न के केवल शारीरिक व मानसिक दृष्टि से कमजोर होता जाता है अपितु सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से शक्तिहीन व संदर्भ हीन भी होता जाता है।

शोध का औचित्य :

हर युग में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। साहित्य वह धरोहर रहा है। साहित्य वह धरोहर है जो पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता जाता है घटता नही। साहित्य अपने युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, विभिन्न मान्याताओं और समस्याओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। साहित्य उपन्यास जहाँ समाज तथा परिवार का यर्थाथ रूप प्रस्तुत करता है वही पाठकों का मागदर्शन भी करता है वह मानव को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में लाता है। साहित्य सामाजिक तथा पारिवारीक धरातल रह कर ही राष्ट्र निर्माण और विकास की ओर अग्रसर होता है। इस बाल को नकारा नहीं जा सकता। आज के वर्तमान समय में बदलते परिवार के अन्तर्गत पिता-पुत्र संबंध की समस्या, घर के सबसे बड़े सुरक्षा की परिवार में स्थिति समाज के

ज्वलंत प्रश्न है। हिन्दी साहित्य की छाया में होने के नाते और भारतीय समाज में विद्यमान सामाजिक समस्याओं को साहित्यिक उपन्यासों के माध्यम से समाज के समुख प्रस्तुत करने का उतरदायित्व हम सभी का है। यही इस शोध का औचित्य है।

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज की सामाजिक पारीवारीक समस्याओं को गहराई से समझने और अध्ययन में सहायक होगा।

शोध की सीमाएँ

साहित्य में अनेक विधायें प्रचलित है जैसे कहानी, कविता, उपन्यास एकांकी, आलोचना, जीवनी यात्रा वृतांत, निबंध इत्यादि। भारतीय समाज में अनेक साहित्यकारों ने सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। आज के अनेक लेखक विभिन्न विधाओं पर सक्रिय लेखन कार्य कर रहे हैं। साहित्यकार राष्ट्र एवं समय की मांग की अनुसार अपने ईद-गिर्द जो कुछ देखता है अनुभव करता है वह उसे लिपिबद्ध कर साहित्य का सृजन करता है। परन्तु मेरे शोध के विषय "बदलते पारिवारीक संदर्भ में वृद्ध एवं समकालिन हिन्दी उपन्यास (2000 ई० अब तक) तक सीमित है। अतएव वैज्ञानिक प्रविधि के मांग के अनुसार अध्ययन की अवांतर दिशाओं में न जाकर गृहित अवधि (2000ई0 अब तक के) प्रमुख उपन्यासों के सामाजिक पक्षो पर विशेष ध्यान दिया जायेगा

तथा आलोनात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ विषय से विवेचित तथा विश्लेषित करने का प्रयत्न किया जाएगा।

शोध का उदेश्य:

21वीं सदी के उपन्यासों के द्वारा शोध का प्रमुख उदेश्य समाज में बदलते पारिवारिक संदर्भ में वृद्ध की मूल्यों की स्थिति को विश्लेषित करता है। तथा समकालिन उपन्यासों में व्यक्त वृद्धों की मूल्यों की स्थिति का सटिक वर्णन करना तथा उनकी समस्याओं तथा समाधान ढूँढना उद्देश्य रहेगा।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोधकार्य विश्लेषणात्मक पद्धति से किया जाएगा। अनुसंधान की आवश्कता के अनुकूल शोध कार्यों की अन्य पद्धतियों का उपयोग किया जाएगा।

बदलते पारिवारिक संदर्भ में वृद्ध और समकालिन उपन्यास

हिन्दी साहित्य में गद्य की एक महत्वपूर्ण विद्या के रूप में उपन्यास आधुनिक युग में लोकप्रियता का एवं विशाल है। प्रेमचन्द उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मानते है। प्रेमधन्द हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में ऐसे उच्च शिखर है, जहाँ से खड़े होकर पाठकीय संवेदना और उनके रूपकार के संबंध में सुविधापूर्वक विचार किया जा सकता है। वर्तमान समय में भारतीय परिवार व रिश्तों की संरचना तेजी से बदल रही है। न केवल परिवार का मुखिया (वृद्ध) अपितु पिता-पुत्र संदर्भ में जमीन आसपास का अंतर आ चुका है। पुत्र के रिश्ते से मिले दर्द को आगामी पिताओं को सदियों तक सहना होगा। इस संदर्भ में भारतीय साहित्य समकालिन उपन्यासों ने वर्तमान समय बदलते पारीवारीक संदर्भ में वृद्धों की जीवन का चरित्र चित्रण कर उनकी सारी मूल्यों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

जहाँ वृद्ध जीवन पर साहित्यकार मस्तराम कपूर की 'विषय पुरूष (1997), पंकज विष्ठ उस चिड़ियों का नाम (2005), काशीनाथ सिंह-रेहन पर रग्घु (2006), चित्रा मुदगल 'गिलिगडू (2010), निर्मल वर्मा-अंतिम अरण्य' (2005). कृष्णा सोबती 'समय सरगम (2012), ममता, 'कालिया दौड़, डॉ सूरज सिंह नेगी-रिश्तों की आँच (2016), 'वसीयत (2018) और 'नियति चक्र' (2019) इत्यादि है।

जहाँ एक तरफ 'समय सरगम'में दो समान धर्मा वृद्ध समय को आर्शीवाद की तरह गुजार रहे है। वही बहुत घर से बेघर हो रहे हैं, मारे-पीटे जा रहे हैं (गिलिगडू)। या घर से दूर पुलियाओं पर बैठ कर समय काट रहे हैं (चार दरवेश)। और कुछ नही तो भारतीय आश्रम व्यवस्था से निकल मठो में (विषय पुरूष) या पाँचवा आश्रम की शरण में है। ऐसे कम ही बुजुर्गों को 'रिश्तों की आँच मिल रही है और नियति चक्र में पिसकर भी सुबह को भूले शाम को लौट आते हैं। और जिन्हें बुजुर्गों के हाथों से वसीयत मिलती है उपन्यास, साहित्य समाज और परिवार में बुजुर्ग सदस्यों की स्थिति एवं बदलते रूप से दो-चार हुआ जा सकता है।

क्या वृद्धत्व के लिए भी किसी तरह की तैयारी हो सकती है ? उपन्यासकार मस्तराम कपूर का उपन्यास विषय पुरुष का नायक धीरे-धीरे घर से बेगाना होकर एक मत में पहुँच जाता है। और अपने जीवन भर के लिए पापों को मुक्ति के उपाय ढूढ़ता है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में कृष्णा सोबती का सरगम एक प्रयोग है। ऐसे सौभाग्यशाली कहीं है जो एक बिछुड़ जाने पर अकेले होकर घुटघुट कर न जीते हो। कृष्णा सोबती की रचना में आरण्या और इंसान दोनों मिलकर जैसा जीवन जीते है वह रचनाकार की कल्पना की दुनिया भले ही हो पर आदर्श वृद्ध की जीवन की झांकी दिखायी देती है। और भारतीय परंपरा को नई दिशा मिलती है। अन्यथा वृद्ध की मौत का इंतजार करने का दूसरा नाम है।

बहुत जी लिए अपनों के लिए जैसे उद्धार जब निकलत है तब एक वृद्ध पिता का परिवार से मोह भंग होने की दास्तान है "रेहान पर रग्घु। जिसके दोनों बेटे उनसे दूर चले जाते है। बार-2 बुलाने पर भी नहीं लौटते हैं। वह जमीन का महत्व समझता है जो अंतिम समय में बेटों से आकर जमीन बेचने के लिए कहता है क्योंकि उससे यह काम नहीं हो सकता। वह बड़े बेटे के द्वारा छोड़ दी गई पत्नी के साथ रहता है। लेकिन आज बुजुर्ग होते पिता और उसके खास प्रिय व धरोहर बेटा क्यों दूर हो रहा है? इस भावना की मूल तक जाने का प्रयास डॉ सूरज सिंह नेगी के उपन्यास वसीयत में बखुबी हुआ है। इसमें न केवल पिता की चिंता है बल्कि उसका समाधान की खोजा गया है। समाधान रचना तक ही नहीं बल्कि व्यवहार के धरातल पर भी पग व डायरी के रूप में है। वर्तमान समय में रिश्तों की समस्या बड़ी पेचिदा, जटिल और विकट होती चली जा रही है पिता-पुत्र के ऐसे ही पहाड़ होते दर्द को विषय वस्तु बनाया है अपने तीनों उपन्यासों में डॉ० नेगी न रिश्तों की आँच, वसीय और नियति चक्र। वर्तमान में पिता-पुत्र के संबंध बड़े बदलाव से गुजर रहे है। भारतीय संस्कृति की पाश्चात्य संस्कृति से मुठभेड़ है। यह देश राम और श्रवण कुमारों का रहा है लेकिन वर्तमान में व्यक्तिवादी सोच बढ़ रही है। वर्तमान समकालिन उपन्यासों ने वृद्ध पर विपती हुई दुःख को समाज के सामने लाकर उनके वृद्ध जीवन की समस्याओं को सुलझाने का अथक प्रयास किया है।

बदलते पारिवारिक संदर्भ में वृद्धों की समस्या और उसके समाधानः-

आज हमारे समाज में वृद्ध लोगों को दोयम दर्जे का व्यवहार का सामना करना पड़ रहा है। देश में तेजी से सामाजिक परिवर्तनों का यह दौर चालू है। इस कारण वृद्धों की समस्याएँ विकराल रूप धारण कर रही है। इस मुख्य कारण देश उत्पादन एवं मृत्यु दर में कमी आना या मृत्यु दर का घटना। जबकि राष्ट्रीय एवं अन्र्तराष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या की गतिशिलता से है। विगत पांच दशको से यह देखा गया है कि वृद्धों को बेगानापन, अकेलापन आदि के समस्याओं से होकर गुजरना पड़ रहा है। वर्तमान समय में युवा और वृद्धों की बीच संवेदनशीलता की खाई इतनी गहरी हो गई वृद्धों को अनावश्यक तनाव सहना पड़ रहा है। वृद्धा अवस्था प्रायः थकान, कार्यशीलता में कमी, रोगों की प्रतिरोधक क्षमता की कमी से संबंधित होता है। यही कारण इनके दैनिक जीवन के कार्याक्लापों को दुर्बल बनाती है। वृद्ध का यह अकेलापन शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बना देती है। जिसके परिणाम स्वरूप वृद्ध में चिड़चिड़ापन उत्पन्न हो जाता है जिसके कारण परिवार में अच्छे संबंध नहीं बन पाते हैं। अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

सच्चाई यह है कि वृद्धावस्था जीवन की संध्या यानी डुबते हुए सूरज के समान है और यही जीवन का सबसे अनिवार्य क्रम क्योंकि धरती पर जिसने भी जन्म लिया है उसे एक न एक दिन वृद्ध होना ही है। "निराला" के अनुसारः-

"मैं अकेला हूँ,
देखता आ रही मेर दिवस की सांध्य बेला।

समाज में वृद्धों के समक्ष उभर कर जो समस्या आ रही है वह है शारीरिक एवं मानसिक तनाव, परिवार से अलगाव बेगानापन का भाव, आर्थिक असमर्थतता दो पीढ़ियों के बीच मानसिक टकराहत इत्यादि।

चयनित उपन्यासों में जिस तरह से मूल्यों में बदलाव हुआ है। नये 2 चरित्र चित्रण और मूल्य आए है। अच्छे मानवीय मूल्यों के विघटन की जो समस्याएँ निर्माण हुई है। उन्ही का समाधान हेतु हमें चयनित उपन्यासों में हुई घटनाओं एवं पागो द्वारा लेखन ने कैसे किया है। इसका अध्ययन किया जाएगा।

अग्रिम अनुसंधान हेतु सुझाव –

अनुसंधान सतत् वतने वाली प्रक्रिया है। जो सामाजिक समस्याओं पर चलती रहती है और ये समस्या व्यवहारिक जीवन से संबंधित होती है। इसलिए अनुसंधान रिपोर्ट के अंत में रचनात्मक सुझाव अवश्य देने चाहिए जिससे अग्रिम शोधकर्ताओं को अपने शोध कार्य के लिए क्षेत्र व अनुभव प्राप्त हो सके।

सारांशः-

आज के वर्तमान युग में बदलते पारिवारिक संदर्भ में वृद्ध अपने ही घर की दहलीज पर पर खड़ा है उसकी आँखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा है दहशत है. दिल में दर्द है। इन त्रासदी और डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलाती होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारीक जीवन में वृद्धों को सम्मान दे, इसके लिए सही हम दिशा में चले, सही सोचे, सही करे। इसके लिए आज विचार क्रांति ही नही व्यक्ति क्रांति की आवश्यकता है।

आज वृद्ध समाज परिवार से कटा रहता है और सामान्यतः इस बात से दुखी है कि जीवन का विशाल अनुभव होने के बावजूद कोई उनकी राय न तो लेना चाहता है और नही उनकी राय की महत्व देता है। समाज में अपनी एक तरह से अहमियत न समझे जाने के कारण हमारा वृद्ध समाज दुःखी उपेक्षित एवं त्रासद जीवन जीने को विवश है। वृद्ध समाज को इस दुःख और कष्ट से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

भारतीय साहित्यकारों को समय-2-पर उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज में वृद्ध के साथ हो रहे समस्या से अवगत कराते रहे हैं। इन उपन्यासों से वृद्ध जीवन से संबंधित जो तथ्य प्राप्त हुए है आज की युवा पीढ़ी को आगे बढ़कर उनकी समस्या नहीं उनकी समाधान की कड़ी बने। नयी पीढ़ी को पाश्चात्य दिखावे को और

व्यक्तिवादिता दिखावों को त्याग कर एक किनारा बन कर वृद्ध के साथ समन्वय स्थापित करें।

भारत में वृद्धों की समस्या एक सामाजिक समस्या बन गई है इस समस्या के कारण समाज के लिए वृद्धों के भरण-पोषण की अधिक जिम्मेदारी वहन करना अनिवार्य सा हो गया है। परन्तु सार्वजनिक भरण-पोषण की व्यवस्था अभी भी प्रारंभिक चरण में है।

संदर्भित ग्रंथ

व्यक्तिवादिता दिखावों को त्याग कर एक किनारा बन कर वृद्ध के साथ समन्वय स्थापित करें।

भारत में वृद्धों की समस्या एक सामाजिक समस्या बन गई है इस समस्या के कारण समाज के लिए वृद्धों के भरण-पोषण की अधिक जिम्मेदारी वहन करना अनिवार्य सा हो गया है। परन्तु सार्वजनिक भरण-पोषण की व्यवस्था अभी भी प्रारंभिक चरण में है।

संदर्भित ग्रंथ

1. बुढ़ापा शायरी, अकबरी इलाहाबादी रेखता वेवसाईट
2. मस्तराम कपूर विषय पुरुष (1997)
3. पंकज विष्ठ उस चिडियों का नाम (2005)
4. काशीनाथ सिंह रेहन पर रग्धू (2006)
5. चित्रा मुदग्ल गिलिगडू (2010)
6. निर्मल वर्मा अंतिम अरण्य (2011)
7. हृदयेश चार स्वदेश (2011)
8. अज्ञेय अपने-2 अजनबी (2005)
9. कृष्णा सोबती समय सरगम (2012)
10. ममता कालिया दौड़
11. रविन्द्र वर्मा पत्थर उपर पानी
12. डॉ० सूरज सिंह नेगी रिश्तों की आँच (2016)
13. डॉ० सूरज सिंह नेगी वसीयत (2018)
14. डॉ० सूरज सिंह नेगी नियति चक्र (2019)
15. उषा प्रियचंदा वापसी